राज कॉमिक्स

अश्वराज और तूताबूता की आत्मा

मूल्य 6.00 संख्या 545

करोड़पति

इसी सैट के कामिक्स

- आखिरी गोली (डोगा)
  इस कामिक्स के साथ डोगा का एक स्टीकर मुफ्त
- भूरा बिल्ला (भेड़िया)
- काली कण्ठी (भोकाल)
- जादू की धरती (गोजो)
- तूताबूता की आत्मा (अश्वराज)
- बवाल (बिल सीरीज)

आगामी सैट के कामिक्स

- दलदल (सुपर कमांडो ध्रुव)
- खबरदार योद्धा (योद्धा)
- आयरनसोर (परमाणु)
- गोजो युद्ध (गोजो)
- ब्लास्ट (भेड़िया)
- प्रचंडा और आओ (प्रचण्डा)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन प्रकाशक : राजा पाकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-9 वितरक : नागराज नावल्टीज 313, दरीबा कलां, दिल्ली- ६

अश्वराज और तूताबूता की आत्मा

लेखिका : मीनू वाही कलानिर्देशन : प्रताप मुलीक
सम्पादन : मनीष गुप्ता, चित्र : गोपाल नांदूरकर
सुलेख : पुष्पा पालवणकर

इधर, राज कार्यवाही से निवृत होकर राजा चिन्तितसिंह विश्रामकक्ष में पहुंचे --
ओह! मुझे ऐसा आभास क्यों हो रहा है, जैसे पुत्री कुदुमछुम्बी मुझसे मिलने यहां आ रही है।
और तभी कक्ष में गूंज उठा वह हिंसक स्वर--
तुम्हें बिल्कुल ठीक आभास हो रहा है राजा चिन्तितसिंह! तुम्हारी पुत्री सचमुच तुम्हारे विलक्षण दामाद अश्वराज के साथ यहां आ रही है।
एक ही झटके में राजा चिन्तितसिंह की तलवार म्यान से बाहर आ गई--
कौन है विश्राम कक्ष में?
जवाब में गूंजी एक भयानक हंसी!
और प्रकट हुआ वह साया, जिसे राजा चिन्तितसिंह हर्गिज नहीं देख सकते थे!
तूताबूता की आत्मा!
विचित्र अंदाज में सिकुड़ गए राजा चिन्तितसिंह के होंठ।
ओह! एक बार अश्वराज से टकराया था तो अपने प्राण खो बैठा था, अब क्या अश्वराज के हाथों अपनी आत्मा को भी अंधे कुएं में लटकाना चाहता है?
त... तूताबूता की आत्मा?
चिन्ता की घनी लकीरों से भर गया राजा चिन्तितसिंह का मस्तक।

नहीं! इस बार मैं उसे ऐसा कोई अवसर नहीं दूंगा। क्योंकि इस बार मैं उसकी इच्छाधारी शक्ति यानि अश्वशक्ति उससे छीन लूंगा!
अश्व शक्ति! हा हा हा!
खोखली हंसी थी राजा चिन्तितसिंह की।
और खोखले शब्द, जिन्हें दृढ़ करने का भरकस प्रयास किया राजा ने।
...तू अश्वराज का सामना ही न कर पायेगा शैतान।
उसी का इंतजाम करने तो मैं यहां तुम्हारे पास आया हूं राजा!
तूताबूता की आत्मा ने अपनी कमर पर लटकी कई डिबियों में से निकाली एक तिलिस्मी डिबिया--
राजा! मैं तुम्हारी आत्मा इस डिबिया में कैद कर दूंगा। और तुम्हारी आत्मा का स्थान ले लूंगा।
खाली जिस्म तुम्हारा होगा और आत्मा मेरी। अब बोलो! अश्वराज से इच्छाधारी अश्वशक्ति प्राप्त करना मेरे लिए आसान होगा या नहीं? हा हा हा
ओहऽऽ हिच्च
उफ! क्या तूताबूता की आत्मा सचमुच मेरी आत्मा कैद कर रही है, आह!
राजा चिन्तितसिंह प्राण बचाने के लिए कक्ष के द्वार की ओर लपका--
मुझे इस कक्ष से बाहर निकल जाना चाहिए। आह!
कहां भागता है राजा! आत्मा को अपने जिस्म के पिंजरे से तो आजाद होने दे।

राजा चिन्तितासिंह का जिस्म फर्श पर पड़ा रह गया, और आत्मा ने प्रवेश किया उस तिलिस्मी डिबिया में—
तत्क्षण ही—
और अब मैं प्रवेश करता हूं राजा के जिस्म में।
तुरन्त ही उठकर खड़ा हो गया राजा!
हा हा हा हा! अब कौन कह सकता है कि मैं राजा चिन्तित सिंह नहीं, बल्कि तूताबूता हूं! अश्वराज की मौत हूं! हा हा हा!
और तभी—
महाराज की जय हो। महाराज! राजकुमारीजी दामादजी के साथ पधारी हैं।
मूर्ख! तेरे महाराज तो मेरी जादुई डिबिया में कैद हैं। हा हा हा।
तभी वहां आ पहुंचे कुमकुम और अश्वराज!
ओह! कुमकुम! अश्वराज! तुम्हें देखने को आंखें तरस गई थीं।
पिताश्री! sss

अश्वराज झुक गया श्वसुरश्री के चरणों में—
प्रणाम पिताश्री!
दामादश्री! तुम्हारा स्थान वहां नहीं…
…तुम्हारा स्थान तो हमारे हृदय में है… हा हा हा।
चौंक पड़ा अश्वराज।
चौंक पड़ी कुमकुम…
पिताश्री! यह आप क्या कर रहे हैं? लौटा दीजिए अश्वराज की अश्वशक्ति।
हा हा!
??
"धड़ाम" से फर्श पर गिर पड़ा राजा चिन्तितासिंह का जिस्म!
पिताश्री!
??
चीख निकल गई थी कुमकुम के कंठ से और हतप्रभ खड़ा रह गया था अश्वराज।
इसी के साथ गूंज उठा एक अट्टहास! और अश्वराज की निगाहें टिक गईं हवा में लटकी अश्वशक्ति पर—
अश्वशक्ति किन्हीं अदृश्य हाथों में है।
हो हो हा!
पर कौन है ये?

क्रोधित हो उठा अश्वराज!
कायर! अगर अश्वराज का सामना करने की हिम्मत है तो सामने आ! मेरी ललकार का जवाब दे।
आह! पिताश्री! क्या हुआ आपको?
अश्वराज! इसे रोको अश्वराज! पिताश्री के प्राण... वे मृत पड़े हैं।
क्या?
सरसराई अश्वराज की तलवार—
हा हा हा! अश्वराज! तूताबूता की आत्मा का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते।
तूताबूता की आत्मा?
हां, अश्वराज! तुमने मेरा जिस्म तो खत्म कर दिया था, पर मेरी आत्मा को तुम कभी समाप्त नहीं कर पाओगे।
तीर की सी तेजी के साथ सरसराकर उस सैनिक के सीने में धंस गई तलवार—
??

साथ ही गूंज उठा तूताबूता का कठोर स्वर!
अश्वराज! मैं चाहूं तो इसी प्रकार तुम्हें भी लाश में बदल डालूं। लेकिन तुम्हारे लिए एक भयानक मौत चुनी है मैंने! तुमसे अपनी शिकस्त का बदला मैं गिन-गिन कर लूंगा!
अब तुमसे तूता महल में ही मुलाकात होगी अश्वराज!
अगर तुम्हें अपनी अश्वशक्ति वापस चाहिए और अपने श्वसुरश्री, विलक्षण पंचाश्व के प्राण बचाने हैं तो मुझ तक अतिशीघ्र पहुंचना...
... क्योंकि इनकी आत्माएं मैं अपने साथ ले जाऊंगा। और अगर इन शरीरों को परसों सूर्यास्त से पूर्व इनकी आत्माएं वापस नहीं मिलीं तो शरीर सड़ कर कंकालों में परिवर्तित हो जायेंगे।
सहसा कुमुम चीख पड़ी—
रक्ताम्बर, अश्ववट, कालाखोर, अश्वशक्ति और नीलकंठ के प्राण संकट में हैं अश्वराज!
शैतान तूताबूता की आत्मा उनकी आत्माओं को भी ले जाने का प्रयास करेगी। उफ!
और फिर अश्वराज ने गिरते देखे पंचाश्व जिस्म—
नहीं! नहीं!

आह! कुछ न कर सका आज अश्वराज तुम्हें बचाने के लिए। और शैतान तूताबूता तुम्हारी आत्माओं को कैदी बनाकर ले गया! उफ!
हतप्रभ खड़ा था प्रत्येक व्यक्ति। किसी की समझ में न आ रहा था कि मौजूदा परिस्थितियों में क्या करें।
ओह, नहीं!
और तब—
कुदुम! कठिन परीक्षा की घड़ी सिर पर है। मुझे तूता-महल जाना होगा और टकराना होगा तूताबूता की आत्मा से।
पंचाश्व को रथ से जुदा करने का आदेश देकर आगे बढ़ आया सेनापति—
अश्वराज! आप अकेले नहीं जायेंगे। शैतान के अंत के लिए मैं अपनी सेना लेकर आपके साथ चलता हूं।
नहीं सेनापतिजी! उस दुष्ट की ललकार का जवाब देने अकेला ही जायेगा अश्वराज।
तब तक पंचाश्व और महाराज के जिस्मों की सुरक्षा का भार आप पर और कुदुम पर होगा।
किंतु अश्वराज! तूताबूता की आत्मा पर विजय तुम किस प्रकार प्राप्त करोगे?

गम्भीर प्रश्न उठाया था कुदुमछुम्बी ने—
अगर उस शैतान ने तुम्हारी आत्मा को भी तुम्हारे जिस्म से जुदा कर दिया तो ऐसे में तुम क्या कर सकोगे?
कुदुम! अगर उसने मेरी आत्मा को मेरे जिस्म से जुदा करना होता तो वो यह कार्य अभी ही कर गया होता।
...अगर उसने ऐसा नहीं किया तो वो अब भी अपना मकसद हल किए बिना मेरी आत्मा को मेरे शरीर से जुदा नहीं करेगा, जिसके लिए उसने मुझे जीवित ही छोड़कर तूतामहल आने का निमन्त्रण दिया है...
अश्वराज की बात में वजन है राजकुमारीजी! किंतु अश्वराज! अगर उसने किसी प्रकार तुम्हें विवश करके अपना वो मकसद भी हल कर लिया तो?
एक स्वर गूंज उठा—
तुम्हारी इस समस्या का हल है 'विचित्रा!'
राजगुरु आप?
हां अश्वराज! तुम्हारी यह समस्या हल कर सकती है विचित्रा नामक मणि।
अगर तुम उसे प्राप्त कर सको तो न केवल तुम उसके जैसे अदृश्य होकर उस पर वार भी कर सकते हो। बल्कि तूताबूता की आत्मा को भी उसमें कैद कर सकते हो।
विचित्रा मणि मुझे कहां मिलेगी राजगुरु?
वह मैं तुम्हें बताऊंगा।

चिन्तापोकली नगर के निकट ही बसा था चीना! जिसके राजा हूचांग की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा था उस वस्तु को देखकर—
उफ! नहीं विश्वास नहीं होता मुझे।
क्या ये ही अश्वशक्ति है तूताबूता?
इसे अपने मस्तक पर रखो और परख कर देख लो हूचांग!
भयंकर प्रसन्नता पसीने की भांति टपक रही थी राजा हूचांग के चेहरे के ज़र्रे-ज़र्रे से
हां! यही उत्तम तरीका है तूताबूता की आत्मा! क्योंकि मुझे विश्वास तब ही आयेगा।
अश्वशक्ति को अपने मस्तक पर रख बुदबुदाया हूचांग—
मैं बन जाऊं मगरमच्छ! हाहाहा हा!
ओह! ये तो मैं सचमुच मगरमच्छ बन गया। हा हा हा! ये तो अश्वशक्ति ही है। अश्वराज की शक्ति, अश्वशक्ति! हा हा हा!
हूचांग! राजा चिन्तित सिंह की आत्मा को भी मैंने कैद कर लिया है। तुम्हारे लिये ये सुनहरा अवसर है।

मैंने अपना वायदा पूरा कर दिया हूचांग! अब तुम्हें अपना वायदा पूरा करना है।
वाह! वाह! अवश्य पूरा करूंगा तूताबूता की आत्मा!
परसों सूर्यास्त से ठीक पहले मैं पांच सौ मानव बलि के लिए बंदी बनाकर तूता महल में भेज दूंगा!
सभी मानव सूर्यास्त से पूर्व तूता-महल में पहुंच जाने चाहिए हूचांग!
हा हा हा! बहुत दिनों से चिंतापोकली नगर पर आक्रमण की इच्छा थी! अब वो पूरी हो जायेगी। क्योंकि अश्वराज तो अब तूताबूता की आत्मा के जाल से जीवित बच कर नहीं निकल पायेगा।
और राजा चिन्तितसिंह की बोलती तो तूता-की आत्मा ने बन्द कर दी है।
लोमड़ी के समान चमक रहे थे हूचांग के नेत्र!
चिन्तापोकली नगर पर आक्रमण की तैयारी करो सेनापति कुलच्छणसिंह!
किंतु महाराज!
और चकित रह गया सेनापति कुलच्छणसिंह, हूचांग के मुंह से अश्वशक्ति के बारे में सुनकर।

इधर एक अन्य रथ पर सवार आगे बढ़ चला था अश्वराज–
इस सफर पर मेरे विलक्षण पंचाश्व मित्रों की कमी मुझे बहुत खलेगी।
जबकि इधर राजा हूचांग ने अपनी विशाल सेना के साथ चिन्तापोकली नगर की ओर कूच किया–
अश्वशक्ति के बल पर जीत लूंगा मैं चिन्ता पोकली और फिर अन्य राज्यों को भी। अब पूरी पृथ्वी का राजा बनूंगा मैं।
चिन्तापोकली नगर में यह समाचार सुनकर बेचैनी फैल गई–
क्या? चीना के राजा हूचांग ने चिन्ता-पोकली पर चढ़ाई कर दी है।
उफ! एक के बाद ये दूसरी बड़ी समस्या!
सेनापतिजी! महाराज और अश्वराज की अनुपस्थिति में हमें ही इस समस्या को हल करना होगा। युद्ध की तैयारी करवाइये।
हूचांग को उसके आक्रमण का मुंह-तोड़ जवाब दूंगा मैं राजकुमारीजी!
हे ईश्वर! रक्षा करना चिन्ता-पोकली नगर के अस्तित्व की।

इधर अश्वराज अपने रथ को किनारे पर ही छोड़ कर उस जलाशय में आगे बढ़ रहा था–
लाल पानी के इस जलाशय में ही है विचित्रा तक पहुंचने का द्वार।
शीघ्र ही--
यही है वो सुरंग जिसकी बाधाएं पार करके मुझे पहुंचना है विचित्रा तक।
अजीब स्थान है! सुरंग पानी में है, किंतु सुरंग में पानी नहीं है।
हा हा हा! सुरंग में पानी नहीं है नौजवान, किंतु संकट बहुत अधिक है...
कौन हो तुम?
विचित्रा की रक्षक... सिंघाड़ी!
इसी पल चौंक पड़ा अश्वराज–
उफ! यह क्या? यहां तो भरपूर मात्रा में पानी मौजूद है।
सिंघाड़ी तुम्हें इतनी आसानी से जल में नहीं डूबने देगी नौजवान!
झपट पड़ा वो विशाल हाथ अश्वराज पर और–
ओह नहीं!

अश्वराज! इन सीढ़ियों के अंतिम छोर पर मौजूद है विचित्रा। कोशिश करो। शायद तुम उसे प्राप्त कर सको। हा हा हा हा।
उफ! ये हाथ तो मेरा कचूमर निकाले दे रहा है।
किंतु विचित्रा को तो मुझे हर हाल में प्राप्त करना ही है।
अश्वलोक के सबसे ताकतवर योद्धा के भी दाँतों तले पसीना आ गया उस वक्त–
ओह, नहीं! वह नुकीली व भारी चट्टान सीधी मेरे सिर की ओर आ रही है।

जिस्म की ताकत का एक-एक जर्रा उसने इस "जकड़" से स्वतन्त्र होने में लगा दिया–
तू मुझे विचित्रा तक पहुंचने से रोक नहीं पायेगी सिंघाड़ी!
खुली हुई हथेली को चीरती चली गई वह नुकीली चट्टान–
खचाक
उफ! बाल-बाल बचा!
पानी में गिरे अश्वराज के कदम एक ठोस सतह से टकराए–
उफ! एक और मुसीबत!
और वह सतह उसे पानी के बाहर निकालती चली गई–
और वह सतह थी एक खोपड़ी जिस पर अश्वराज के साथ मौजूद था...
...चिब्बड़! अश्वराज, मेरा हाथ तेरे जिस्म पर जहां चिपक गया, वहीं से तेरा मांस उखाड़ लेगा! हा हा हा!
उफ!

इधर खोपड़ी तैर रही थी हवा में। और इधर जमीन सतह अब परिवर्तित हो गई थी मौत के फर्श में–
जिस पर गिरने का अर्थ अश्वराज भली-भांति जानता था–
उफ! इसके हाथों से तो बचना ही होगा, साथ ही नीचे गिरने से भी खुद को बचाना होगा।
और इस बार अश्वराज ने अवसर पा लिया चिब्बड़ पर वार करने का–
मुझे युद्ध की इस छोटी सी धरा पर ही टिके रहने दे चिब्बड़!
शीघ्र ही सम्भल कर अश्वराज पर झपट पड़ा चिब्बड़–
चिब्बड़ अपने पर हुए वार का पूरा बदला लेता है।
अश्वराज के होंठों से आह सी निकल गई उस क्षण–
हा हा हा! अब तेरा मांस यहां से गया अश्वराज!

अश्वराज ने दूसरे पांव की भरपूर ठोकर चिब्बड़ के सीने पर जड़ दी–
पकड़ने थे तो दोनों पांव पकड़ता चिब्बड़ देख। तेरी ये नादानी तुझे कितनी महंगी पड़ेगी।
ठाक
ओह!
चिब्बड़ के हलक से गूंज उठी मौत की चीख–
अगर ये कुछ देर और जीवित रहता तो मुझे हड्डियों का ढांचा ही बना डालता।
खोपड़ी फट पड़ी और अश्वराज जाकर गिरा सीढ़ियों पर लगी अग्नि में।
उफ
नीचे गिरने के साथ ही अश्वराज अपनी ढाल संभाले ऊपर की ओर लपका–
न जाने कितनी सीढ़ियों तक फैली है ये अग्नि।

अग्नि-रोधक वस्त्र पहने उन शैतानों का ये आक्रमण आकस्मिक ही था—
धाड़
उफ! एक और मुसीबत!
अश्वराज की तलवार विद्युत सी चमचमाती हुई गुजर गई—
तने का ये वजन ही तुम्हारे लिए मौत बन जायेगा अब।
इधर तने सहित सीढ़ियों पर लुढ़कते चले गए चारों दुश्मन—
आह
उधर अश्वराज अपनी तलवार उठाकर ढाल से अग्नि को काटता हुआ निकल आया उस मुसीबत के बाहर—
आह! अग्नि के भीषण ताप ने जगह-जगह से झुलसा डाला है मेरे जिस्म को।
किंतु इस क्षण में अग्नि के ताप ने झुलसा डाला था अश्वराज के बदन को—
सीढ़ियों के छोर पर आ पहुंचा अश्वराज—
ओह! वह रही विचित्रामणि।

दिखाई पड़ी सिंघाड़ी—
अश्वराज! विचित्रा तक पहुंचने के लिए तुम्हें पंखों का वह जोड़ा प्राप्त करना होगा।
??
साथ ही बचना होगा खौलते लावे के तालाब और पंखखोर से। इसे पंख खाने का बहुत शौक है। हा हा हा हा!
ओह! ये मुझे आसानी से पंख प्राप्त नहीं करने देगा
पंखखोर को अधिक अवसर न दिया था अश्वराज ने और—
पंखखोर! तुझे पंख खाने का शौक अवश्य होगा, किंतु इन पंखों की आवश्यकता इस समय अश्वराज को है। समझा!
जबरदस्त टक्कर थी—
तेरी आवश्यकता अब लावे के तालाब में गिर कर पूर्ण होगी अश्वराज! हा हा हा।
वार पर वार जारी थे—
ओह! ये नुकीली उभरी चट्टान ठीक समय पर हाथ लगी।

अश्वराज की ठोकर खाकर जो उछला पंखखोर तो सीधा गिरा पंखों के जोड़े के निकट, और—
हा हा हा हा! अश्वराज! तेरी मेरी लड़ाई अब खत्म हो जायेगी, क्योंकि इन पंखों को खाने के बाद तेरा मुझसे लड़ने का उद्देश्य ही खत्म हो जायेगा।
इसी पल चीख पड़ा पंखखोर—
अश्वराज का सटीक वार था वो—
किंतु वहीं बस नहीं किया अश्वराज ने!
अब जाकर खौलते लावे से अपना पेट भरियो पंखखोर!
खौलते लावे में समा गया पंखखोर।
इसी पल चौंक पड़ा अश्वराज।
ओह! विचित्रा वाला खम्बा लावे में समाने लगा है!
मुझे ये पंख धारण कर शीघ्रता से विचित्रा मणि पर अधिकार कर लेना चाहिए!

पीठ पर पंख धारण कर अश्वराज विचित्रा की ओर उड़ा—
ओह, नहीं! विचित्रा लावे में समा रही है।
इसी पल अश्वराज के सीने में पड़ी वह टक्कर—
सिंघाड़ी को कैसे भूल गया अश्वराज?
सिंघाड़ी जोंक के समान चिपक गई अश्वराज से—
उफ! इसे मैं सचमुच कैसे भूल गया?
सिंघाड़ी का एक हाथ बढ़ा अश्वराज का पंख उखाड़ देने को, जिसे थाम लिया अश्वराज ने। अश्वराज की निगाहें थमी थीं विचित्रा पर भी—
अश्वराज ने सिंघाड़ी को अपने हाथों के भरपूर झटके से लावे में उछाल फेंका—
आहऽऽ
और बाज की तरह झपट पड़ा विचित्रा पर—
उफ!

क्षण भर का विलम्ब भी मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर देता।
तूतामहल—
यही है तूतामहल, वहां एक बार मैंने शैतान तूताबूता को मृत्यु के घाट उतारा था
तूतामहल के द्वार पर पहुंचा ही था अश्वराज कि—
चले आओ अश्वराज!
फिर शीघ्र ही—
मैं जानता था अश्वराज कि तुम शीघ्र ही यहां आओगे।
और मैं आ गया हूं तूताबूता की आत्मा।
विचित्रा की उपस्थिति के कारण तूताबूता की आत्मा इस समय मुझे साफ–साफ दिखाई पड़ रही है।
··· मुझसे सामना कर और स्वतन्त्र कर दे महाराज चिन्तितासिंह तथा पंचाश्व की आत्माएं।
इतनी भी जल्दी क्या है अश्वराज! मुझे अपना जिस्म वापस प्राप्त करने के लिए महामृत्युंजय यज्ञ पूर्ण करना है और ये तब पूर्ण होगा, जब कोई चक्रवर्ती अश्वसम्राट स्वेच्छा से अपने रक्त की पांच बूंदें इस यज्ञ कुण्ड में गिराए और इसके बाद पांच सौ बलियां मैं अपने शैतान को दूं।
ओह! तो ये कारण था मुझे जीवित यहां तक लाने के पीछे।

तुम्हारी अश्वशक्ति के बदले में पांच सौ बलियों के लिये मानव तो चीना सम्राट हूचांग मुझे पहुंचा देगा और रक्त की बूंदें स्वेच्छा से तुम मुझे दोगे।
ओह! तो अश्वशक्ति सम्राट हूचांग के पास है।
अश्वराज! सूर्यास्त में केवल कुछ देर बाकी है। जल्दी करो, अन्यथा उन डिबियों में कैद तुम्हारे प्रियजनों की आत्माएं उनके जिस्मों के बिना भटकती रहने पर विवश हो जायेंगी।
और अश्वराज! तेरे रक्त की बूंदें एक बार यज्ञकुंड में गिरते ही तू मेरा गुलाम बन जाएगा! और यह तेरी एक भयानक मृत्यु होगी। हा हा हा हा।
इसी पल अश्वराज के हाथ में चमचमाई विचित्रा—
··· जिसे देखकर बेचैन हो उठी तूताबूता की आत्मा—
ओह! यह इसके हाथ में क्या थमा है, जिसे देखकर मुझ पर बेचैनी छाने लगी है?
अब अश्वराज ने लगाया ठहाका
हा हा हा। तूता की आत्मा विचित्रामणि को देखकर घबरा गया न?

इसे मैंने तेरे लिए ही प्राप्त किया है। ये देख अब मेरा जिस्म भी अदृश्य आत्मा सा हो गया है।
और मैं न सिर्फ तुझे अच्छी तरह से देख ही पा रहा हूं, बल्कि मेरे प्रहार का भी तुझ पर बराबर असर होगा!
तूताबूता की आत्मा! अब मैं तुझे अपने रक्त की पांच बूंदें नहीं, बल्कि एक भयानक कैद दूंगा, जहां से तू कभी निकल न पायेगा।
बाज़ी पलटने के वह शस्त्र तूताबूता की आत्मा ने अश्वराज पर खींच मारा—
अश्वराज! मैं तो आत्मा हूं ही। अब तुझे भी आत्मा में बदल दूंगा। हा हा हा!
अश्वराज ने तूताबूता की आत्मा के शस्त्र को रोका अपनी ढाल पर—
टनाक
इधर तूताबूता झपट पड़ा उन डिबियों की ओर—
अब तेरे सभी स्वजनों की मृत्यु निश्चित है अश्वराज, क्योंकि मैं इन डिबियों को यज्ञकुण्ड के सुपुर्द कर दूंगा।

उन तिलिस्मी डिबियों तक तूताबूता की आत्मा का हाथ अभी पहुंच भी न पाया था कि अश्वराज की ठोकर ने उसके सभी मनसूबों पर पानी फेर दिया—
इनके प्राण तो मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। तूताबूता की आत्मा, अब तू उन्हें हाथ भी न लगा पायेगी।
अग्निकुंड की लपटों में जाकर गिरी तूताबूता की आत्मा—
उफ
और इधर उन डिबियों को खोलता चला गया अश्वराज—
जाओ। अपने जिस्मों पर अधिकार करो।
और रक्ताम्बर, अश्वपट, कालखोर, नीलकंठ। अपने जिस्म प्राप्त करके तुम फौरन मुझ तक पहुंचो।
अश्वराज ने खाली डिबियों को अग्निकुंड के सुपुर्द कर दिय

इधर बुरी तरह क्रोधित तूताबूता की आत्मा एक बार फिर उठ खड़ी हुई। किंतु इस बार अश्वराज ने विचित्रा को उसके आगे कर दिया—
ऐ विचित्रा शक्ति तूताबूता की आत्मा को कैद कर।
नहीं! उफ!
आह! मेरी आत्मा उस मणि में समा रही है। नहीं! नहीं!
और शीघ्र ही—
दुष्टात्मा! अब मैं इस मणि को तेरी आत्मा को यज्ञकुंड में भस्म कर देने का...
...आदेश दे रहा हूं!
इसी के साथ भयानक चीखों से गूंज उठा कक्ष।
फिर वापस लौटने के लिए अपने रथ पर सवार ही हुआ था वह कि—
आगे बढ़ो। सम्राट हुचांग का आदेश है कि पांच सौ व्यक्तियों को तूतामहल पहुंचाया जाए।
??

अब ये बन्दी नहीं रहेंगे और तुम्हारे सम्राट की ही तलाश है अब मुझे।
ओह! अश्वराज आ गया।
अश्वराज का नाम ही काफी था सैनिकों के हौसले पस्त करने के लिए—
बताओ कहां मिलेगा मुझे तुम्हारा सम्राट?
सम्राट चिन्तापोकली पर आक्रमण के लिए गए हैं।
और फिर स्वतन्त्रता की प्रसन्नता व जोश में अश्वराज की जयजयकार से गूंज उठा वातावरण—
अश्वराज जिन्दा बाद
अश्वराज जिन्दाबाद
आप सब लोग अपने-अपने घरों को लौट जाएं, क्योंकि मुझे अब यहीं से सीधा रणभूमि में ही जाना है।
और तभी तीव्र हिन हिनाहटों से गूंज उठा क्षेत्र—
ओह! पंचाश्व आ पहुंचे।
रथ से उतरकर पंचाश्व से लिपट गया अश्वराज—
अहा! रक्ताम्बर! कालाखोर! अश्ववट! श्रव्य शक्ति! नीलकंठ!
अश्वराज! जल्दी करो चिन्तापोकली पर संकट मंडरा रहा है।

अब भला कौन रोक सकता था उस तूफान को–
मुझे शीघ्रातिशीघ्र युद्ध भूमि का हाल दिखाओ रक्ताम्बर!
रक्ताम्बर जो देख सकता था कोसों दूर तक, बताने लगा उसे युद्धभूमि का हाल
और इधर स्वयं राजा चिन्तितसिंह के नेतृत्व में युद्धभूमि में आ पहुंची सेनाएं–
भयानक शोर मचाती हुई आ पहुंची सम्राट हूचांग की भी सेना–
हाहाहा! अश्वशक्ति से नहीं जीत पायेगी चिन्ता-पोकली की सेना, लेकिन… अरे!
एकाएक ही चौंक पड़ा हूचांग।
राजा चिन्तित सिंह की आत्मा को तो तूताबूता ने कैद कर लिया था, फिर ये जीवित कैसे हो गया?
भयानक युद्ध छिड़ा–
हा हा हा! मेरी शक्ति अविजित है राजा!
खलबली मचा दी हूचांग ने–

इधर दुश्मनों के सिर उड़ाता हुआ आ पहुंचा अश्वराज भी–
अश्वराज
सम्राट हूचांग के सामने पहुंच कर रुका अश्वराज का रथ–
हूचांग! अश्वशक्ति मुझे वापस कर दे और अपनी पराजय मानकर लौट जा। अन्यथा युद्धभूमि से अब तू जीवित बच कर नहीं जायेगा।
रौंद तो अब मैं तुझे दूंगा अश्वराज, क्योंकि मेरे पास तेरी जो शक्ति है उसका सामना तो तू भी नहीं कर सकता। हाहाहा!
और रथ से गायब हो गया अश्वराज–
मेरे पास अब जो शक्ति है। उसका अंतिम प्रयोग मैं यहीं करूंगा सम्राट हूचांग!
अरे! कहां गया अश्वराज?

अश्वराज यहां है शैतान!
अरे! अश्वशक्ति!
बड़ी तेजी के साथ हुचांग अपने पूर्व रूप में लौट आया।
और इधर अश्वराज के मस्तक पर वापस चमचमा उठी अश्वशक्ति—
हुचांग! अब तू यहां से जीवित बचकर वापस नहीं जायेगा।
ओह! खेल बिगड़ गया!
सोचता ही खड़ा रह गया हुचांग और अश्वराज की तलवार ले उड़ी उसका सिर—
इधर राजा चिन्तितसिंह ने भी छक्के छुड़ा रखे थे दुश्मनों के--
अश्वराज के आगमन के बाद तो अब मेरी सारी चिन्ता ही मिट गई है।
कि तभी सम्राट हुचांग की मृत्यु के साथ ही भगदड़ मच गई चीना की सेना में। समाप्त हो गया युद्ध—
और इस प्रकार --
अश्वराज! तुम्हें दामाद के रूप में पाकर मैं धन्य हो गया।
और फिर जब महल लौटा अश्वराज--
अश्वराज!
कुसुम!
दोनों की आंखों में थे इत्मिनान और भावुकता के आंसू।
समाप्त

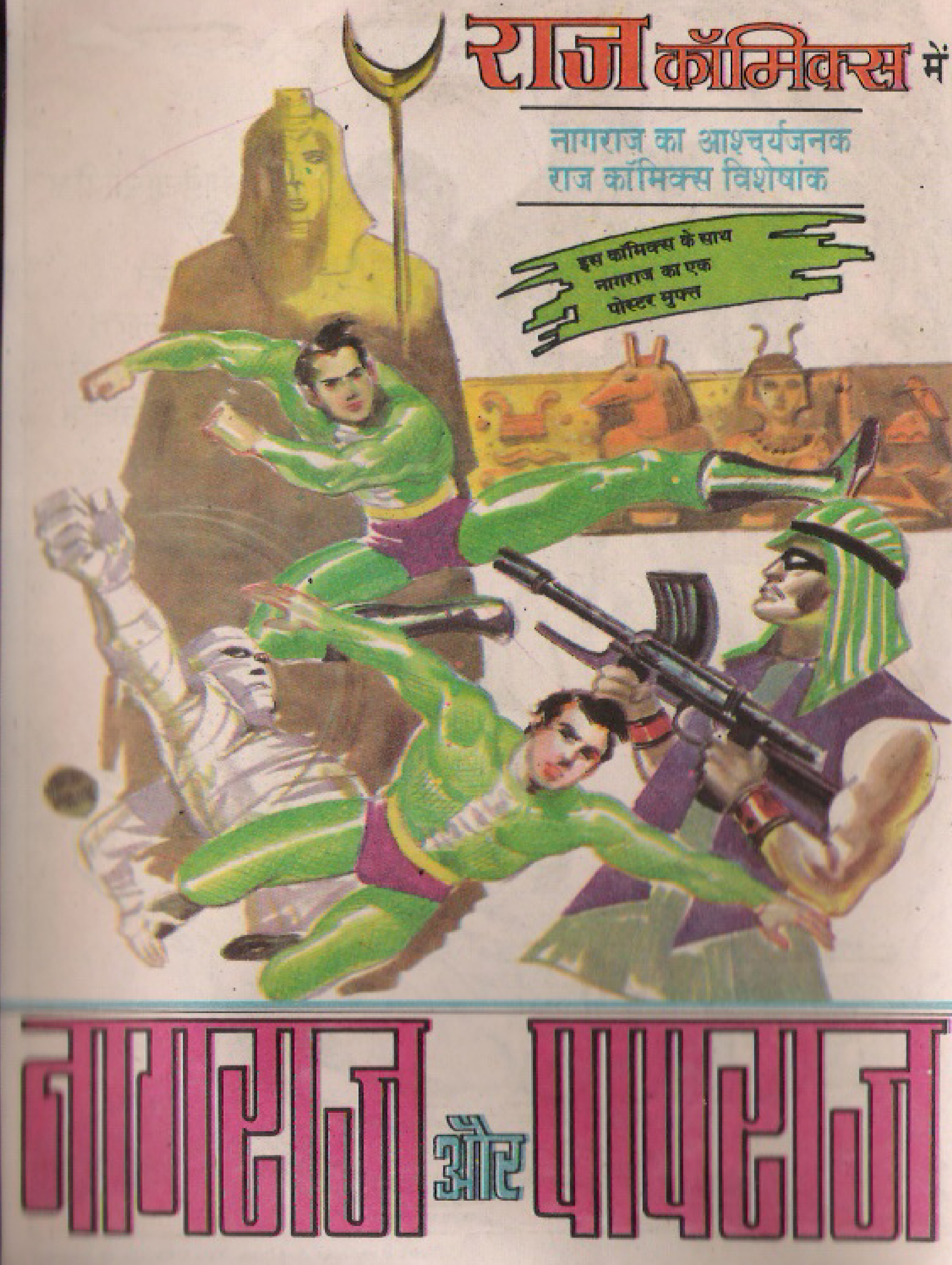
राज कॉमिक्स में
नागराज का आश्चर्यजनक
राज कॉमिक्स विशेषांक
इस कॉमिक्स के साथ नागराज का एक पोस्टर मुफ्त
नागराज और पापराज